प्रकृति विज्ञान

करके उसी गुण के पर्दाथ का निर्माण करता है। जब व्यक्ति का शरीर छूट जाता है तो उसका शरीर अनेको पदार्थ में परिवर्तित हो जाता है। उस पदार्थ में उसकी इच्छा वाला गुण आ जाता है, जो अपने गुण का मानव बनाने में क्रियाशील हो जाता है। जब मानव अपने आप को 'प्रकृति विज्ञान' का परिणाम जान पायेगा और अपनी हर क्रिया को एक विज्ञान मानने लगेगा तब वही इच्छा पैदा करेगा जिसकी आवश्यकता होगी। ऐसा होने से मानव की ऊर्जा जो व्यर्थ में निकल जाती है, वह सुरक्षित रहने लगेगी। इसकी जो ऊर्जा व्यर्थ में निकलती है, वह व्यर्थ नही जाती है, बल्कि जिसके लिये निकलती है, उस गुण का निर्माण करती है। इसी व्यर्थ की ऊर्जा से नकारात्मक ऊर्जा पैदा होती हैं, जो स्वयं के और दूसरों के कार्यों में व्यवधान उत्पन्न करती है। बिमारी और अशान्ति का कारण बनती है। इसी नकारात्मक ऊर्जा से भ्रष्टाचार जैसी बिमारी का जन्म होता है। इसकी जड़ यही है, इसे रोकने के लिए मानव को अपनी विचारधारा सकारात्मक करनी पड़ेगी तभी लोग इस बिमारी से बच पायेगें। ईमानदारी का चोला पहनने से कोई ईमानदार नही हो जाता है। जब तक कि उसके अन्तःकरण से उसकी सुगन्ध नही आती हैं। नकारात्मक सोच पीछे से चली आ रही है। जिसके कारण से मिट्टी ही प्रदूषित हो गयी है और उसी गुण को धारण करके लोग पैदा हो रहे है । इससे बचने के लिए मानव को अपने आप को विज्ञान मानना पड़ेगा, जो है अपनी इच्छा शक्ति को सकारात्मक बनाकर मानव सुगन्ध बनना, तभी प्रकृति की मिट्टी से नकारात्मक ऊर्जा खत्म हो पायेगी । परिणाम स्वरूप दुर्गन्ध खत्म हो जायेगी और पीड़ा पहुँचाने वाली ऊर्जा नही पैदा होगी। ऐसा होने पर मानव का वह सपना पूरा हो जायेगा, जिसमें मानव पीड़ा मुक्त खुशहाल पुष्प की तरह खिलकर मानवता की सुगन्ध छोड़ते हुए देखना चाहता है। मानव प्रकृति विज्ञान का सबसे सुन्दर प्राणी है। इसी के अन्दर वह क्षमता है कि अपनी इच्छा शक्ति से किसी भी गुण को पैदा कर सकता है, जैसी इच्छा इसके अन्दर पैदा होती है, वैसा अहसास इसको होता है। उस एहसास से उस गुण की ऊर्जा पैदा होती है, जो शरीर में उस गुण का निर्माण करती है और उस गुण की सुगन्ध प्रकृति में निकल जाती है। जो हवा रूप में उस का विस्तार करती है। अपने गुण से सम्बन्धित लोगों के अन्दर श्वसन क्रिया से अन्दर पहुँचकर अपने गुण का भाव पैदा करती है। शरीर के अन्दर का गुण शरीर छुटने के बाद मिट्टी बनकर उस गुण का मानव पैदा करने लगती है। यही ऊर्जा भविष्य में फिर पैदा होने के बाद उसके काम आती हैं। यही उसकी धन राशि होती है, जो उसके विकास में सहायक होती है। इसलिये मानव को दूसरे को पीड़ा पहुँचाने वाली इच्छा नही पैदा करनी चाहिये। मानव एक ज्ञानी प्राणी है जो जहाँ जिस विषय की जरूरत है, उसे पहचान सकता है। किस विषय में किस गुण को मिलाने से निर्माण होता है, यह जानकर उसी गुण को मिलाना चाहिए। जिससे प्रकृति और सुन्दर बन जायेगी और मानव तन सुन्दर होने के साथ भाव से भी सुन्दर हो जायेगा। ऐसा होने से आगे आने वाले समय में मिट्टी बदल जायेगी। उसमें से इसी गुण की सुगन्ध निकलने लगेंगी और मानव सुगन्ध वाले मानव पैदा होने लगेगे। ऐसा होने पर मानव को पीड़ा पहुँचाने वाले मानव पैदा होना बन्द हो जायेगा। भ्रष्टाचार व अन्य बिमारियाँ स्वतः खत्म हो जायेगी। एक खुशहाल मानव समाज का निर्माण होने लगेगा।

मानव प्रकृति जगत में सुगन्ध की साज है अर्थात् सुगन्ध को सजाने वाला प्राणी है। मानव अपने ज्ञान से प्रकृति को सुगन्धित करने चर-अचर जीव को पहचान कर उसको बढ़ा सकता है। अपनी वैज्ञानिकता से पदार्थ का शोधन करके उत्पादन को बढ़ा सकता है। शायद प्रकृति अपनी इन्ही इच्छाओं की पूर्ति के लिये मानव प्रजाति की उत्पत्ति की होगी। यह कार्य ज्ञानी, वैज्ञानिक ही कर सकते है। पर हर मानव सकारात्मक इच्छा धारण करके मानव खुशहाली की सुगन्ध बढ़ा सकता है। जीवन रहते यह खुशहाली प्रकृति को सुगन्धित करती रहती है और शरीर छोड़कर जाने के बाद उसकी मिट्टी स्थायी रूप से हमेंशा यह सुगन्ध छोड़ती रहती है। प्रकृति को इसका लाभ मिलने के साथ ही स्वयं को इसका विशेष लाभ मिलता है। जैसी इच्छा पैदा होती है, वैसा ही एहसास शरीर को होता है। अच्छी सोच रखने से अच्छा एहसास होता है जिसके लिए सोच पैदा की जाती है, उससे भी उसी गुण की सुगन्ध अपने पास आने लगती है। अच्छी सोच से तनाव, बिमारी और मन अशान्त नही होता है। सकारात्मक सोंच से मानव विपरीत परिस्थितियों में भी सहयोग प्राप्त कर लेता है। उदाहरणार्थ - यदि आप कूड़े में बैठे हो और यह सोचे कि यह कूड़ा है, मैं तो फँस गया ज्यादा देर यहाँ रहना पड़ेगा तो बिमार हो जाऊँगा। इस सोच से मानव परेशान हो जायेगा घबराहट, बेचैनी होने लगेगी । कूड़े की नकारात्मक ऊर्जा उसके अन्दर आने लगेगी। पर यदि आप यह सोचो कि यह कूड़ा है यह भी प्रकृति का एक पदार्थ है। इसकी भी प्रकृति को जरूरत है। यह पेड़-पौधो का आहार है। इसके होने से ही हम लोगों का निर्माण होता है। इस सोच से मन अशान्त नही होगा और उससे निकलने वाली ऊर्जा उसके लिए सकारात्मक हो जायेगी, जो उसे नुकसान नही पहुँचायेगी। व्यक्ति अपने विपरित परिस्थतियों के प्रति भी सकारात्मक सोच धारण करके उसकी नकारात्मकता को खत्म कर सकता है और अपनी इसी सोच से अपने आप को हमेशा एक सुगन्धित प्राणी बनाये रख सकता है। ऐसा करने से वह निरोगी और खुशहाल हमेंशा रह सकता है। एक जीवन में ऐसा प्रयास करने के बाद भविष्य में प्रकृति स्वयं विकार मुक्त मानव की रचना करने लगेगी। आप फिर इसी प्रकृति में जन्म लेगें। इसलिए इसे सुगन्धित करने मे अपना सहयोग प्रदान करें इसी आग्रह के साथ।